SHRIMATI VANDANA CHAVAN (Maharashtra): Sir, I also associate myself with the matter raised by the hon. Member.

SHRI KANAKAMEDALA RAVINDRA KUMAR (Andhra Pradesh): Sir, I also associate myself with the matter raised by the hon. Member.

SHRI ABIR RANJAN BISWAS (West Bengal): Sir, I associate myself with the matter raised by the hon. Member.

Need for 'Look South' policy for Meghalaya and to open Border *Hats*

DR. WANWEIROY KHARLUKHI (Meghalaya): Sir, the Look East Policy was formulated by the UPA Government and Act East Policy was formulated by the NDA Government. I thank the Government for the good intention it had for the people of North-East, but, Sir, with regard to my State, Meghalaya, till date, I have not seen or heard of any benefit derived by my State from this policy. Till date, in my State, Meghalaya, the policy is a thing of academic consumption. Well, I would like to remind the House that during pre-independence, the border areas of my State were rich and economically well off because of the benefit they derived from their trade with erstwhile East Bengal (after 1947, East Pakistan and after 1970, Bangladesh). The markets in those days were known as Border Hats. After Independence and till date, the Border Hats have been closed. As a result of this, it had drastically made an impact on the economy of my people, especially those who are living in the border areas. My humble submission to the Government, through you, Sir is this. Why does the Government not think of a new policy for my State, and that is the Look South Policy? Thank you.

SHRI P. WILSON (Tamil Nadu): Sir, I associate myself with the matter raised by the hon. Member.

SHRI MD. NADIMUL HAQUE (West Bengal): Sir, I also associate myself with the matter raised by the hon. Member.

DR. AMAR PATNAIK (Odisha): Sir, I also associate myself with the matter raised by the hon. Member.

DR. SASMIT PATRA (Odisha): Sir, I also associate myself with the matter raised by the hon. Member.

SHRI ABIR RANJAN BISWAS (West Bengal): Sir, I associate myself with the matter raised by the hon. Member.

श्री उपसभापति : माननीय शक्तिसिंह गोहिल जी।

Need to bring back mortal remains of an Indian prisoner who died in jail in Pakistan

श्री शक्तिसिंह गोहिल (गुजरात) :उपसभापति महोदय, मैं एक गंभीर मसला, जो इंसानियत से जुड़ा हुआ है,जिसमें human rights का बड़ा violation होता है, उसको आपकी मंजूरी से यहाँ उठाना चाहता हूँ। उपसभापति महोदय, गुजरात के 580 मछुआरे पाकिस्तान की कैद में हैं। उनके साथ बहुत बुरा व्यवहार होता है। खास कर हमारे गुजरात के गिर सोमनाथ के उना तहसील के वांसोज गाँव का नानू राम कमलिया, जो सिर्फ 44 साल का था, उसको 5 मछुआरों के साथ 9 दिसंबर, 2018 को पाकिस्तान मरीन उठा कर ले गई कि आप हमारी सरहद में आए हो। वहाँ अगर आप गलती से सरहद में आ गए हैं, तो maximum imprisonment is of three months. उनका trial चला और 16 जनवरी, 2019 को उनकी सजा खत्म हो गई, फिर भी हम उनको यहाँ नहीं ला पाए। 44 साल केइस मछुआरे, नानू राम कमलिया की 3 फरवरी को पाकिस्तान की कैद में death हो गई। कम से कम उसके परिवार को अभी तक उसकी dead body तो मिल जानी चाहिए थी। डेढ़ महीने से ज्यादा वक्त हो गया है, लेकिन हमारी सरकार उसकी मृत्यु के बाद वहाँ से अभी तक उसकी dead body यहाँ नहीं ला पाई है।

महोदय, मैं आपके ज़रिए सरकार से यह अनुरोध करता हूं कि कम से कम वह यह देखे कि वहां पर किस तरह human rights का violation होता है। हमारे मछुआरे अगर गलती से थोड़ा सा उधर चले जाते हैं, तो उनको Pakistan Marine उठा कर ले जाती है। चलो ठीक है, गलती हो गई, केस चल गया, ऐसे में maximum imprisonment is of three months. उन्होंने तीन महीने की सज़ा भी काट ली, लेकिन फिर भी हम उनको वापस नहीं ला पा रहे हैं। जब उनकी डेथ हो जाती है, मान्यवर, इनसे पहले गुजरात की जयन्ती बाई जी की भी इसी तरह से वहां पर डेथ हो गई थी और उस समय उनकी dead body लाने में हमारी सरकार को 46 दिन लग गए थे।

महोदय, हमारी सरकार की तरफ से जो भी ज़रूरी कदम हों, वे उठाने चाहिए। पास्ट में हमने हमारे मछुआरों के लिए ट्रैकिंग सिस्टम का इंतज़ाम भी किया था, लेकिन उसमें भी बहुत बड़ा करप्शन हुआ था, वह ट्रैकिंग सिस्टम नहीं चल पाया। गूगल मैपिंग के साथ भी यह काम हो सकता है। महोदय, ये मछुआरे अपनी सरहद से बाहर जाना नहीं चाहते, गलती से चले जाते हैं, चूंकि वहां बॉर्डर पर कोई मार्किंग तो होती नहीं है।